संपादकीय

भारत कृषक समाज परिवार के महाराष्ट्र में धुले नामक स्थान पर कार्यक्रम में भाग लेने के लिए मैं रास्ते में तालुका कन्नड़ के शिवराय गांव में रूका और भास्कर राम राव लघे से मिला जिसके पास 16 एकड़ जमीन है। चालीस गांव घाट पार करने के बाद मैं तालुका धुलिया के शिरूद गांव में आया जहां देवीदास जगन्नाथ चितोदकर से मिला जिसके पास चार एकड़ जमीन थी। इस संबंध में मैंने निम्नलिखित देखा और कहना चाहता हूँ कि :

उनकी फसल उगाने की पसंद मजदूरों के उपलब्ध रहने पर आधारित है। वह कपास उगाना चाहता था किंतु मजदूरों की कमी के कारण ऐसा न कर सका। उसने अपनी आधी जमीन पर कपास उगाई और आधी जमीन पर मक्का उगाई। पिछले पांच वर्षों में मजदूरी दोगुना हो चुकी है।

सरकार द्वारा सस्ता अनाज बांटना शुरू करने से पहले और किसानों को नकद फसलें उगाने के लिए प्रेरित करने से पहले किसान बाजरा और ज्वार उगाते थे और इन्हें खाते थे। अब खाने की आदतें बदल चुकी हैं और अब वे गेहूं खाते हैं।

पिछले कुछ दशकों में जिंदगी बदल चुकी है। अब गांव में रेडियो नहीं है क्योंकि लोग टेलीविज़न देखते हैं और सैल फोन पर रेडियो सुनते हैं। गांव में पहले लगभग 40 लैंड लाईन टेलीफोन थे अब उनके स्थान पर 500 से ज्यादा मोबाईल कनेक्शन हैं।

बड़े किसान राज्य सरकार को दोष देते हैं कि वह सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों को लागू नहीं करती है तो दूसरी तरफ छोटे किसान जिन्हें सरकारी निधियां और आर्थिक सहायता नहीं मिल पाती है वे केन्द्र और राज्य सरकार दोनों को दोष देते हैं।

एक सामान्य प्रश्न मैं आमतौर पर किसानों से पूछता हूँ कि वे सरकार से क्या चाहते हैं। भास्कर चाहता है कि 24 घंटे बिजली हो, सस्ते बीज और खाद मिले। यदि खाद के मूल्य बढ़ते हैं तो उत्पाद या फसलों का मूल्य भी बढ़ना चाहिए। छोटा किसान चाहता है कि सरकार उसके लिए एक कुंआ खोद दे ताकि वह पानी निकाल सके और सदा के लिए आत्मनिर्भर बन जाए।

भास्कर नहीं चाहता कि उनके बच्चे किसान बनें। खेती उन्हीं के लिए है जिनके पास कोई काम नहीं है या कोई अन्य विकल्प नहीं है। दूसरी तरफ देवीदास अपने बेटे को स्कूल नहीं भेज सकता क्योंकि खेती के लिए उसे उसकी जरूरत है। जैसा मेरा मानना है कि देवीदास का मानना है कि पहली बार ऐसा लग रहा है कि वर्षा आधारित खेती करने वाले छोटे किसान की स्थिति एक भूमिहीन किसान से भी बदतर है, जबकि 16 एकड़ जमीन रखने वाला भास्कर इस बात से सहमत नहीं है।